पूर्वावलोकन

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद आयुर्विज्ञान और स्वास्थ्य अनुसंधान के क्षेत्र में निरन्तर अग्रसित रही। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के तीन संस्थानों के नाम परिवर्तित किए गए। आगरा स्थित केन्द्रीय जालमा कुष्ठरोग संस्थान को राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान, दिल्ली स्थित मलेरिया अनुसंधान केन्द्र को राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान तथा दिल्ली स्थित आयुर्विज्ञान सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान को राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के नाम से परिवर्तित किया गया। प्रतिवेदित वर्ष के दौरान, दिल्ली स्थित द्वारका में राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के नवीन भवन का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ। आगरा स्थित राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ एवं अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान का एक भाग विध्वंसक आग से नष्ट हो गया जिसके परिणामस्वरूप 5 करोड़ रुपए मूल्य के उपकरणों, कंज्यूमेबल (उपभोज्य) सामग्रियों और सिविल वर्क की क्षति हुई।

बिल एवं मेलिण्डा गेट्स फाउण्डेशन की वित्तीय सहायता में *आवाहन इंडिया एड्स इनीशिएटिव* के अन्तर्गत परिषद के पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान द्वारा भारत के 6 उच्च व्यापकता वाले राज्यों यथा आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मणिपुर, नागालैण्ड और तमिल नाडु में इंटरवेंशन कार्यों से पूर्व और उसके पश्चात् आबादी में व्यवहारात्मक एवं जैविक प्रवृत्ति संबंधी आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं।

परिषद के चेन्नई स्थित यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र द्वारा *माइकोबैक्टीरियम ट्युबरकुलोसिस* के आण्विक जानपदिक रोगविज्ञान पर अध्ययन किए गए जिसका उद्देश्य क्षयरोग के जीनोम में मौजूद जातिवृत्तिक कड़ी की व्याख्या करना, विश्व में इस रोग के संचरण के स्वरूप के साथ तुलना करना, और यक्ष्मज दण्डाणुओं की विकासात्मक जैविकी को स्पष्ट करना था।

एक बहुकेन्द्रीय स्थल तैयार करने की गतिविधि आरम्भ की गई जिसका उद्देश्य *हीमोफिलस इंफ्लुएंजी बी* मस्तिष्कशोथ और न्युमोनिया के निवारणशील भार का आकलन करने के लिए एक वैक्सीन प्रोब अध्ययन की शुरुआत करना है।

मानव इंफ्लुएंजा के लिए प्रथम वर्ष का निगरानी कार्य पूर्ण किया गया। लगभग आधी संख्या में आइसोलेट्स H3N2 के अन्तर्गत थे और लगभग एक चौथाई H1N1 और टाइप बी के अन्तर्गत थे। महाराष्ट्र के नवापुरा और जलगांव में एवियन इंफ्लुएंजा की घटना घटी जिसके लिए H5N1 विषाणु जिम्मेदार था। पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन का राष्ट्रीय इंफ्लुएंजा केन्द्र है, ने उन व्यक्तियों की जांच में भाग लिया जिनमें उससे प्रभावित होने का इतिहास था। रियल टाइम पी सी आर प्रणाली, न्युक्लिक एसिड सीक्वेंस आधारित प्रवर्धन (एन ए एस बी ए) प्लेटफॉर्म का प्रयोग करते हुए लगभग 500 नमूनों का परीक्षण किया गया। एक भी नमूना धनात्मक नहीं पाया गया।

चण्डीपुरा विषाणुज मस्तिष्कशोथ की घटना वर्ष 2003 में आंध्र प्रदेश में तथा वर्ष 2004 में गुजरात में हुई थी, वर्ष 2005 में आंध्र प्रदेश में उसकी पुनः उपस्थिति हुई। वर्ष 2001 में पश्चिम बंगाल में घटित सिलीगुड़ी प्रकोप का रहस्य अन्ततः हल किया गया। सी डी सी, अटलांटा के सहयोग में संपन्न अध्ययनों से पता चला कि इसके पीछे निपाह विषाणु का हाथ था। भारतीय उपभेद बांग्ला देश और मलेशियन उपभेद से संबद्ध पाया गया।

वर्ष 2006 की शुरुआत में हिन्द महासागर में चिकनगुण्या का एक प्रमुख प्रकोप घटित हुआ था। भारत में राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिल नाडु और केरल में रोगी प्रकाश में आये थे। राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान द्वारा भारत के सभी राज्यों को नैदानिक किट (मैक एलाइजा) उपलब्ध कराया गया। अनेक राज्यों से प्राप्त विषाणुज आइसोलेट्स की जीनोटाइपिंग से देखा गया कि पूर्व में एशियन जीनोटाइप के कारण घटित प्रकोपों के विपरीत वे अफ्रीकी जीनोटाइप के अन्तर्गत थे। अफ्रीकी उपभेद से गंभीर रुग्णता हुई थी।

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान, छोटे बच्चों के घर पर आधारित चिकित्सा प्रबंध पर परियोजना में शिशु रक्षकों और आंगनवाड़ी की कार्यकर्ताओं के नाम से ज्ञात प्रशिक्षित ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया और वितरण की जाने वाली सेवाओं के साथ तुलना की गई।

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान, पॉण्डिचेरी स्थित रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र द्वारा *बैसिलस थुरिंजिएंसिस वैर इ़ज़राइलेंसिस* से मच्छर के डिंभकनाशी उत्पाद को तैयार करने की एक प्रक्रिया के लिए किए गए एक आवेदन को पेटेंट की मंजूरी प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त, आठ पेटेंट आवेदन फाइल किए गए, जिसमें पांच भारत में और शेष विदेश में फाइल किए गए।

परिषद के कोलकाता स्थित क्षेत्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य केन्द्र ने अर्गोनॉमिक के सिद्धान्तों पर आधारित एक साइकिल रिक्शा को पुनः डिजाइन करके विकसित किया जिसके लिए एक पेटेंट आवेदन किया गया है।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में मानव पैपिलोमा वाइरस (एच पी वी) वैक्सीन के चिकित्सीय परीक्षण की शुरुआत करने के लिए भारतीय

आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और मर्क के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। नोएडा स्थित कौशिकी एवं निवारक अर्बुदशास्त्र संस्थान को भारतीय एच पी वी वैक्सीन पहल के लिए राष्ट्रीय समन्वयक केन्द्र के रूप में नामित किया गया है।

इंडियन जर्नल आफ मेडिकल रिसर्च का इंपैक्ट फैक्टर वर्ष 2004 में 0.600 की तुलना में वर्ष 2005 में बढ़कर 0.869 हो गया।

वर्ष 2005 के दौरान भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा लगभग 450 शोध पत्र प्रकाशित किए गए। वर्ष 2005-2006 के दौरान कुल 779 अनुसंधान परियोजनाओं और 372 फेलोशिप्स को वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगी कार्यक्रम के अन्तर्गत 70 वैज्ञानिकों के भारत आने और भारत से विदेश जाने के पारस्परिक भ्रमण का प्रबंध किया गया। दक्षिण–दक्षिण सहयोग के लिए एम आर सी (दक्षिण अफ्रीका), एफ आई ओ सी आर यू ज़ेड (ब्राज़ील) और भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए जिसका उद्देश्य आयुर्विज्ञान रुचि के स्वास्थ्य विषयों पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करना है।

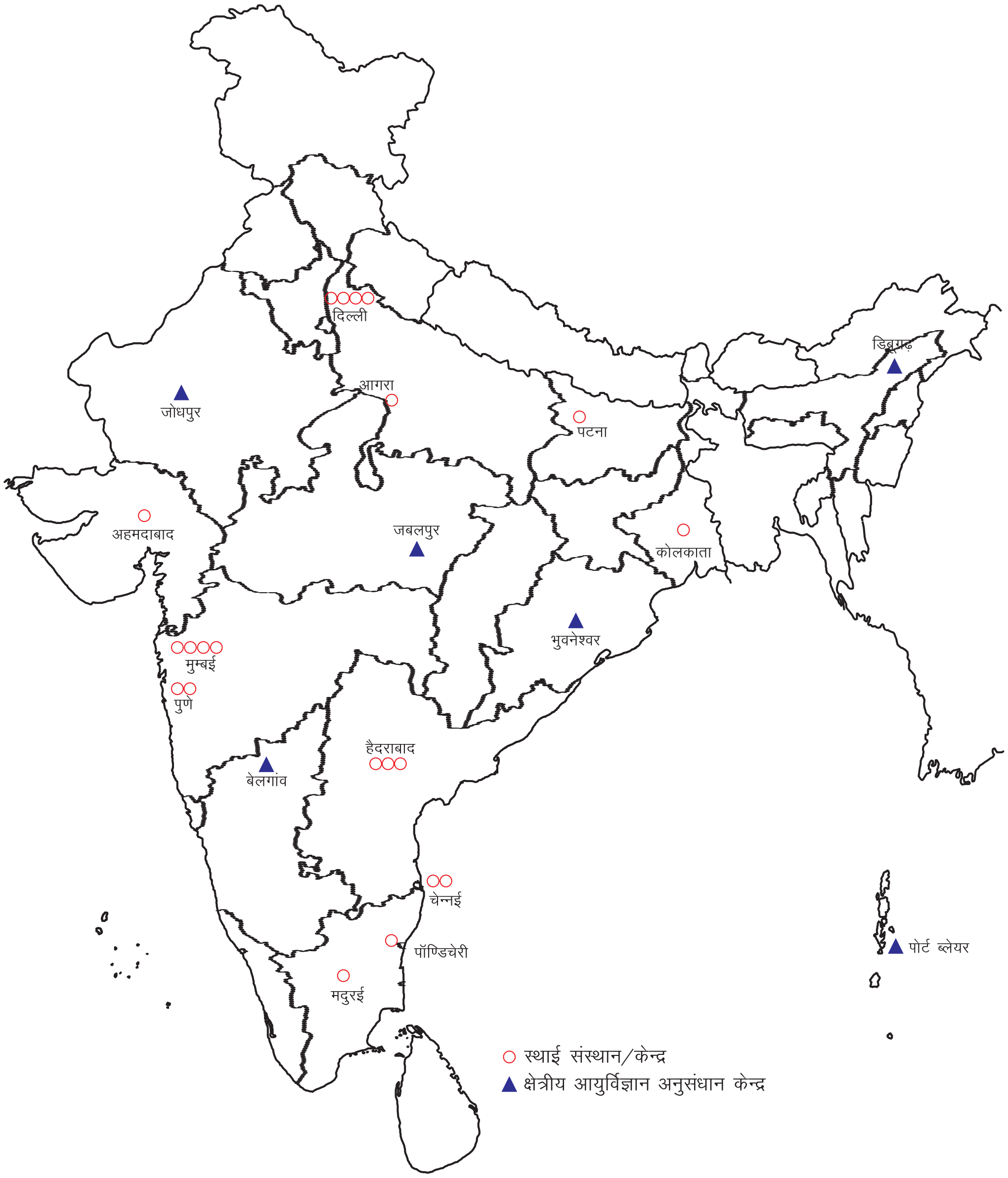

देश भर में फैले परिषद के अनुसंधान संस्थान तथा केन्द्र